Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 1 | Issue 2 | (Apr – Jun 2024)

हरियाणा में सनातन धर्म का सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

रुचि हुड्डा
एस.डी.गर्ल्स कॉलेज, उचाना

भूमिका

भारत एक प्राचीन सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक धरोहर से समृद्ध राष्ट्र है, जिसकी पहचान सनातन धर्म से जुड़ी हुई है। सनातन धर्म कोई एक पंथ नहीं, बल्कि एक जीवनदृष्टि है, जो मानव जीवन के चार पुरुषार्थ – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को संतुलित रूप से साधने की बात करता है। यह धर्म सहिष्णुता, करुणा, सत्य, अहिंसा और आत्मानुभूति जैसे मूल्यों पर आधारित है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में इस धर्म की अभिव्यक्ति भिन्न रूपों में होती आई है, और हरियाणा इस परंपरा का एक सशक्त केंद्र रहा है। हरियाणा, जो वैदिक काल में 'सरस्वती सभ्यता' का हिस्सा रहा, भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ऋग्वेद में वर्णित सरस्वती नदी के तट पर बसी यह भूमि महाभारत के युद्धस्थल कुरुक्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध है, जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया। यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि हरियाणा को सनातन धर्म के गहरे प्रभावों का केंद्र बनाती है। यहां की लोक संस्कृति, रीति - रिवाज, त्योहार, सामाजिक संरचना और जीवन पद्धति में सनातन परंपराओं की गूंज स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। हरियाणा में सनातन धर्म का सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के दैनिक जीवन, पारिवारिक मूल्यों, आचार - विचार, तथा सामाजिक ताने - बाने में भी गहराई से समाहित है। विवाह, जन्म संस्कार, मृत्यु आदि सभी जीवन के पड़ावों पर सनातन परंपराओं की स्पष्ट झलक मिलती है। साथ ही, धार्मिक मेलों, मंदिरों, लोकगीतों, नृत्य शैलियों और लोककथाओं में भी इसकी सांस्कृतिक उपस्थिति देखी जा सकती है।

सनातन धर्म की मूल अवधारणाएं

सनातन धर्म, जिसे 'हिंदू धर्म' के व्यापक रूप के रूप में भी जाना जाता है, भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे प्राचीन धार्मिक और दार्शनिक परंपरा है। 'सनातन' का अर्थ है- शाश्वत, अर्थात जो सदा से है और सदा रहेगा। यह धर्म केवल पूजा -पद्धतियों या देवी -देवताओं की उपासना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक जीवन -पद्धति है जो मानव के नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और भौतिक जीवन को संतुलित करने का मार्गदर्शन करता है। सनातन धर्म की मूल अवधारणाओं में प्रमुख रूप से चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) आते हैं। ये चारों जीवन के चार प्रमुख उद्देश्य माने गए हैं। 'धर्म' का अर्थ है कर्तव्य, नैतिकता और नियमों का पालन। 'अर्थ' जीवन यापन हेतु धन -संपत्ति का उपार्जन है, लेकिन धर्म के अनुसार। 'काम' जीवन की इच्छाओं और आनंद का संतुलित भोग है। 'मोक्ष' अंतिम लक्ष्य है - आत्मा की मुक्ति, जो जन्म -मरण के चक्र से मुक्ति का प्रतीक है।

इसी प्रकार, वर्ण व्यवस्था और आश्रम व्यवस्था भी सनातन धर्म की विशेषताएं हैं। वर्ण व्यवस्था व्यक्ति के कर्म और गुणों पर आधारित सामाजिक संगठन है, जबकि आश्रम व्यवस्था – ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास – जीवन के चार चरणों का संकेत देती है। इन व्यवस्थाओं का उद्देश्य व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना था। सनातन धर्म में वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण, गीता आदि को प्रमुख ग्रंथ माना गया है। ये ग्रंथ धर्म, नीति, दर्शन, योग, और आध्यात्मिक चेतना का मार्ग प्रशस्त करते हैं। वेदों में ज्ञान, यज्ञ, प्रकृति और ब्रह्म के रहस्यों का वर्णन है, जबकि भगवद्गीता कर्मयोग, भक्तियोग और ज्ञानयोग की अद्भुत व्याख्या करती है। एक और महत्वपूर्ण पक्ष है – 'एकं सद् विप्राः बहुधा वदंति' – अर्थात "सत्य एक है, ज्ञानीजन उसे विभिन्न नामों से पुकारते हैं।" यह विचार सनातन धर्म की सहिष्णुता और विविधता में एकता की भावना को दर्शाता है।

हरियाणा में सनातन धर्म की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

हरियाणा की धरती सनातन धर्म के ऐतिहासिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। यह प्रदेश न केवल वैदिक काल की संस्कृति का केंद्र रहा है, बल्कि यहां की पौराणिक, धार्मिक और ऐतिहासिक घटनाओं ने भारतीय धर्म -दर्शन को गहराई से प्रभावित किया है। हरियाणा का प्राचीन नाम 'हरियाणक' या 'हरियाण' माना जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है – "ईश्वर की भूमि"। यह नाम ही इस क्षेत्र की आध्यात्मिक महत्ता को प्रकट करता है। वैदिक काल में हरियाणा 'सरस्वती -सिंधु सभ्यता' का प्रमुख केंद्र था। अनेक पुरातात्विक स्थलों जैसे राखीगढ़ी, भिरड़ाना, बनवाली आदि से प्राप्त अवशेष यह दर्शाते हैं कि यह क्षेत्र वैदिक संस्कृति और यज्ञीय परंपराओं से समृद्ध था। ऋग्वेद में वर्णित सरस्वती नदी इसी क्षेत्र से बहती थी, जिससे इस क्षेत्र को "सरस्वती क्षेत्र" के रूप में जाना जाता है।

महाभारत काल में हरियाणा की भूमि को विशेष महत्व प्राप्त हुआ। कुरुक्षेत्र, जो आज हरियाणा के प्रमुख तीर्थस्थलों में गिना जाता है, वही पावन भूमि है जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को भगवद्गीता का उपदेश दिया। यह उपदेश सनातन धर्म के दार्शनिक और आध्यात्मिक स्वरूप की नींव है। महाभारत में वर्णित हस्तिनापुर, काम्यक वन, व्यास आश्रम आदि स्थलों का भी हरियाणा से गहरा संबंध रहा है। मौर्य और गुप्त काल में यह क्षेत्र धर्म और संस्कृति का पोषक बना रहा। यहां अनेक मंदिरों और तीर्थस्थलों की स्थापना हुई, जिनमें शिव, विष्णु, देवी, गणेश आदि की उपासना की जाती रही। हरियाणा के कई जिलों में आज भी प्राचीन मंदिर और आश्रम सनातन परंपराओं की गवाही देते हैं।

हरियाणा में सनातन धर्म का सामाजिक प्रभाव

हरियाणा का सामाजिक ढांचा गहराई से सनातन धर्म की शिक्षाओं, मूल्यों और परंपराओं से प्रभावित रहा है। यह धर्म न केवल लोगों की धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि उनके जीवन के प्रत्येक चरण, समाजिक कर्तव्यों और सामुदायिक व्यवहार को भी दिशा देता है। सनातन धर्म की जड़ें हरियाणा के ग्रामीण और शहरी समाज दोनों में इतनी गहराई से जुड़ी हुई हैं कि इसकी झलक लोगों की सोच, आचार -विचार, परिवार व्यवस्था, तथा सामाजिक आयोजनों में सहज रूप से दिखाई देती है। हरियाणा में परिवार व्यवस्था मुख्यतः संयुक्त परिवार पर आधारित रही है, जो सनातन धर्म की 'कुटुंब' की अवधारणा से जुड़ा है। यह व्यवस्था आपसी सहयोग, आदर, अनुशासन और बड़ों की सेवा जैसे गुणों को महत्व देती है। संस्कारों की परंपरा – जैसे नामकरण, अन्नप्राशन, यज्ञोपवीत, विवाह और अंतिम संस्कार – आज भी सामाजिक जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं।

सनातन धर्म की वर्ण और आश्रम व्यवस्था ने भी समाज को संगठित रखने में भूमिका निभाई है, हालांकि आधुनिक काल में इसकी कई सीमाएं और आलोचनाएँ भी सामने आई हैं। फिर भी, यह प्रणाली ऐतिहासिक रूप से सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्धारण का आधार रही है। हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायती व्यवस्था में भी धर्म का प्रभाव देखा जा सकता है। पंचायतों में निर्णय लेते समय नैतिकता, सत्य, न्याय और धर्म का हवाला दिया जाता है। सामाजिक मेलजोल, निर्णय प्रक्रियाएं और त्योहार सामूहिकता की भावना को मजबूत करते हैं, जो कि सनातन मूल्यों की देन है। यद्यपि पारंपरिक दृष्टिकोण कभी -कभी सीमितता लाता रहा है, फिर भी माता के रूप में शक्ति की उपासना, स्त्री को गृहलक्ष्मी मानना, और धार्मिक आयोजनों में उनकी भूमिका, सनातन धर्म की स्त्री सम्मान की अवधारणा को उजागर करता है। साथ ही, समाज में धार्मिक सहिष्णुता, दान -पुण्य, अतिथि सत्कार, और सामाजिक सेवा की परंपरा भी सनातन धर्म से प्रेरित है। गौ सेवा, अन्न दान, कन्या पूजन, और भजन -कीर्तन जैसी गतिविधियाँ आज भी सामाजिक सामूहिकता और सेवा भावना को बढ़ावा देती हैं।

हरियाणा में सनातन धर्म का सांस्कृतिक प्रभाव

हरियाणा की संस्कृति का स्वरूप सनातन धर्म की गहराई से प्रभावित है। यहां की लोक कला, परंपराएँ, त्योहार, वास्तुशिल्प, और लोक साहित्य सभी में धर्म की छाप स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। सनातन धर्म की शिक्षाएँ और प्रतीक न केवल धार्मिक क्षेत्र तक सीमित हैं, बल्कि वे जनजीवन की सांस्कृतिक धारा में भी समाहित हो चुके हैं। सबसे प्रमुख सांस्कृतिक प्रभाव त्योहारों के रूप में देखा जा सकता है। हरियाणा में होली, दीपावली, जन्माष्टमी, नवरात्रि, रामनवमी, शिवरात्रि, आदि पर्व बड़े उल्लास और भक्ति भाव से मनाए जाते हैं। इन त्योहारों में धार्मिक अनुष्ठान, व्रत -पूजा के साथ -साथ सांस्कृतिक गतिविधियाँ जैसे लोक नृत्य, नाटक (रामलीला, कृष्णलीला), गायन और सामूहिक भोज आदि भी शामिल होते हैं। इससे सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान मजबूत होती है।

लोकगीतों और भजनों में भी धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है। रागनियाँ, जागरण, भजन संध्याएँ – ये सभी न केवल मनोरंजन के साधन हैं, बल्कि धार्मिक शिक्षा और आध्यात्मिक विचारों के प्रसार का माध्यम भी हैं। विशेषकर देवी -देवताओं की स्तुति में गाए जाने वाले लोकगीत ग्रामीण जीवन में विशेष स्थान रखते हैं। हरियाणा के मंदिरों और तीर्थस्थलों में सनातन धर्म की स्थापत्य परंपरा दिखाई देती है। प्राचीन मंदिरों की मूर्तिकला, नक्काशी, और वास्तु -विन्यास धर्म के सौंदर्यबोध को उजागर करते हैं। कुरुक्षेत्र, ज्योतिसर, पेहोवा, असंध, पंचकुला आदि स्थान धार्मिक पर्यटन और सांस्कृतिक गौरव का केंद्र हैं।

पारंपरिक वेशभूषा, खानपान, और रहन -सहन में भी धार्मिक प्रतीकों और मान्यताओं की झलक मिलती है। जैसे महिलाओं का माथे पर बिंदी लगाना, मंगलसूत्र पहनना, तुलसी का पूजन करना, घर में पूजास्थान का होना – ये सभी धार्मिकता और सांस्कृतिक परंपरा का मिश्रण हैं। योग और आयुर्वेद, जो कि सनातन धर्म की देन हैं, आज भी हरियाणा में विशेष रूप से प्रचलित हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सनातन धर्म का प्रभाव

वर्तमान समय में, जब भारत तेजी से आधुनिकता, वैश्वीकरण और तकनीकी विकास की ओर अग्रसर है, तब भी सनातन धर्म की उपस्थिति हरियाणा के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में गहराई से बनी हुई है। हालांकि जीवनशैली में अनेक परिवर्तन आए हैं, फिर भी सनातन परंपराएँ न केवल जीवित हैं, बल्कि नवाचार के साथ पुनर्जीवित भी हो रही हैं। यह इस धर्म की लचीलापन और समय के अनुसार ढलने की क्षमता को दर्शाता है। हरियाणा के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में धार्मिक अनुष्ठान, व्रत, पर्व, और संस्कार आज भी पूरे उत्साह से मनाए जाते हैं। कुरुक्षेत्र, आज भी गीता जयंती महोत्सव के दौरान लाखों श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करता है। सरकार और समाज दोनों मिलकर इन आयोजनों को सांस्कृतिक उत्सवों के रूप में मनाते हैं, जो पारंपरिक धार्मिक मूल्यों को नई पीढ़ी से जोड़ते हैं।

शैक्षणिक संस्थानों और समाज में धर्म और संस्कृति को लेकर रुचि बढ़ी है। स्कूलों में योग, नैतिक शिक्षा, और भारतीय दर्शन को स्थान दिया जा रहा है। सनातन धर्म की शिक्षाएँ अब केवल ग्रंथों में सीमित नहीं, बल्कि डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर भी सुलभ हैं। महिलाओं की भूमिका भी अब केवल धार्मिक कर्तव्यों तक सीमित नहीं रही। वे धार्मिक नेतृत्व, कथा प्रवचन, योग शिक्षक आदि रूपों में भी आगे आ रही हैं। इससे सनातन धर्म की दृष्टि से महिला सशक्तिकरण की एक नई व्याख्या उभर रही है। आज का समाज पर्यावरण संरक्षण, गौसेवा, आयुर्वेद, योग आदि क्षेत्रों में भी सनातन मूल्यों को आधुनिक संदर्भों से जोड़ रहा है। 'वसुधैव कुटुंबकम्', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसे सिद्धांत आज वैश्विक मंचों पर भारत की पहचान बन चुके हैं।

चुनौतियाँ एवं आलोचनाएँ

हरियाणा में सनातन धर्म की गहरी सामाजिक और सांस्कृतिक जड़ें होने के बावजूद, आधुनिक समय में इससे जुड़ी कई चुनौतियाँ और आलोचनाएँ भी सामने आती हैं। ये चुनौतियाँ एक ओर जहां धर्म की व्याख्या और व्यावहारिकता को प्रभावित करती हैं, वहीं दूसरी ओर इससे जुड़े रूढ़िगत पक्षों की भी पुनर्समीक्षा आवश्यक बन जाती है।

सबसे पहली और प्रमुख चुनौती है – अंधविश्वास और कर्मकांड की अति। कुछ वर्गों में धर्म का पालन बाह्य रूपों तक सीमित होकर रह गया है। पूजा -पाठ, तंत्र -मंत्र, ज्योतिषीय अंधश्रद्धा आदि में लिप्त होना धर्म के मूल उद्देश्यों – आत्मविकास और नैतिक जीवन – से भटकाव दर्शाता है। यह प्रवृत्ति विशेष रूप से अशिक्षित या अर्धशिक्षित वर्गों में देखी जाती है। दूसरी बड़ी चुनौती है – जातिवाद और सामाजिक भेदभाव। यद्यपि सनातन धर्म में वर्ण व्यवस्था गुण और कर्म पर आधारित मानी गई थी, परंतु समय के साथ इसका स्वरूप विकृत हो गया। हरियाणा के कई क्षेत्रों में जातीय ऊँच - नीच की भावना आज भी सामाजिक सौहार्द्र को प्रभावित करती है। इससे समाज में विषमता और टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है, जो धर्म की समरसता और एकात्मता की भावना के विपरीत है।

तीसरी आलोचना आधुनिक युवाओं द्वारा की जाती है कि सनातन धर्म परंपराओं में जकड़ा हुआ है, और यह वैज्ञानिक सोच से मेल नहीं खाता। यद्यपि यह पूरी तरह सत्य नहीं है, लेकिन धर्म के कुछ पुराने रूपों को बिना तर्क के अपनाना आज की वैज्ञानिक पीढ़ी को भ्रमित कर सकता है। राजनीतिक उपयोग भी एक चुनौती के रूप में उभर रहा है। धर्म को कभी -कभी राजनीतिक लाभ के लिए प्रयोग में लाया जाता है, जिससे समाज में विभाजन और तनाव उत्पन्न होते हैं। इससे धर्म की सार्वभौमिकता और उदार दृष्टिकोण को क्षति पहुँचती है।

निष्कर्ष

“हरियाणा में सनातन धर्म का सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव” विषय पर किए गए इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि सनातन धर्म केवल एक धार्मिक व्यवस्था नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक संपूर्ण और समावेशी प्रणाली है, जिसने हरियाणा की सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक पहचान को गहराई से प्रभावित किया है। यह धर्म सहिष्णुता, नैतिकता, अनुशासन, कर्तव्य और आध्यात्मिकता पर आधारित है, जो हरियाणा के लोक जीवन में पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित होता आया है। हरियाणा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विशेषतः वैदिक काल, महाभारत, और आर्य समाज आंदोलन के संदर्भ में, यह सिद्ध करती है कि इस भूमि पर सनातन धर्म की जड़ें कितनी गहरी हैं। यहाँ के मंदिर, तीर्थ, त्योहार, और परंपराएं धर्म की विविधता और समृद्धि का परिचायक हैं। सामाजिक जीवन में धर्म का प्रभाव पारिवारिक ढांचे, संस्कारों, पंचायती व्यवस्था और सामुदायिक संबंधों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी सनातन धर्म ने हरियाणा की लोककला, गीत - संगीत, पर्व -त्योहार, स्थापत्य और आचार -विचार को आकार दिया है। यहाँ की संस्कृति धर्म के सहारे विकसित हुई है और आज भी उसमें जीवंत बनी हुई है। योग, आयुर्वेद, भक्ति परंपरा और नैतिक मूल्यों की निरंतर उपस्थिति आधुनिक समय में भी इसकी प्रासंगिकता को सिद्ध करती है। हालाँकि, वर्तमान समय में सनातन धर्म को कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है, जैसे- अंधविश्वास, जातिवाद, कर्मकांड की अति और राजनीतिक उपयोग। परंतु इन समस्याओं का समाधान धर्म के मूल सिद्धांतों ज्ञान, विवेक और आत्मविकास के भीतर ही निहित है।

संदर्भ सूची

1. Chatterjee, S. C., & Datta, D. M. (1984). *An Introduction to Indian Philosophy* (8th ed.). University of Calcutta.
2. Doniger, W. (2009). *The Hindus: An Alternative History*. Penguin Books.

3. Dube, S. C. (1990). *Indian Society*. National Book Trust.
4. Ghurye, G. S. (1969). *Caste and Race in India* (5th ed.). Popular Prakashan.
5. Jha, D. N. (2004). *Early India: A Concise History*. Manohar Publishers.
6. Sharma, R. S. (2005). *India's Ancient Past*. Oxford University Press.
7. Singh, K. (2019). *Cultural Heritage of Haryana*. Haryana Sahitya Akademi.
8. Tyagi, R. (2021). *Vedic Culture and Traditions of Haryana*. Kurukshetra University Journal of Social Sciences, 45(2), 123–138.
9. Yadav, S. (2018). *Folk Traditions and Rituals in Haryana*. International Journal of Cultural Studies, 12(4), 97–110.
10. Government of Haryana. (2022). *Kurukshetra: The Land of the Bhagavad Gita*. Department of Tourism, Haryana. Retrieved from https://haryanatourism.gov.in
11. Pandey, R. (2012). *Hindu Samskaras: Socio -Religious Study of the Hindu Sacraments*. Motilal Banarsidass.